प्रवासी साहित्य की कहानियों में भारतीय और विदेशी समाज का द्वंद्व

दीबा
शोधार्थी, हिन्दी विभाग,
अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ

साराशं

आज इक्कीसवीं सदी में हिन्दी भाषा भी विभिन्न चुनौतियों का सामना करते हुए विश्व भाषा की पंक्ति में आ खड़ी हुई है इसके प्रमुख कारणों में से एक कारण प्रवासी भारतीय हैं जिन्होने हिन्दी को विदेशो में प्रसारित किया और इन्ही में से एक है हिन्दी का प्रवासी साहित्य। आज प्रवासी साहित्य हिन्दी को एक नई पहचान दिला रहा है। भारतीय और विदेशी संस्कृति के टकराव एवं विदेषों में भारतीयों पर हो रहे अत्याचारों अथवा भारतीयों के व संघर्ष को लेकर ही प्रवासी हिन्दी साहित्य का कथा साहित्य हमारे सामने आता है। प्रवासी साहित्य गद्य तथा पद्य सात्यि के माध्यम से हिन्दी भाषा के भविश्य को उज्जवल बना रहा है। आज प्रवासी साहित्य के कथा साहित्य के अन्तर्गत आने वाली कहानियाँ प्रवासी साहित्य को और अधिक बल प्रदान कर रही हैं। प्रवासी भारतीय कथाकारों ने चाहे किसी भी देश को अपनाया हो परंतु उनकी सोच भारत में हो रही गतिविधियों से भी संचालित होती जो कि प्रवासी कथा साहित्य में व जगह–जगह पर दिखाई भी देती है।

मुख्य शब्द–*प्रवासी, साहित्य, कहानी, विदेशी, समाज आदि।*

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः
दीबा,

प्रवासी साहित्य की कहानियों में भारतीय और विदेशी समाज का द्वंद्व,

शोध मंथन,
दिस0 2017, पेज सं0 98.101,
Artcile No. 17 (SM 657)

http://anubooks.com/
?page_id=581

संसार की हर वस्तु या प्राणी गतिशील होती है जो वस्तु या प्राणी अपने समय की चुनौतियों के साथ परिवर्तन नहीकरता उसका अस्तित्व धीरे– धीरे समाप्त होने लगता है। अगर बात मनुश्य की करें तो मनुष्य की जिन जातियों ने या सभ्यताओं ने स्वयं में समय के अनुकूल परिवर्तन किया उन्होने विष्व में अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज की और जो मानव सभ्यताएँ रूढ़िवादी थी और किसी भी तरह के परिवर्तन के विरोध में थी उनका पतन हो गया या यों कहें कि वो एक समिति समय व सीमित भू–भाग में ही सिमट कर रह गयीं। यही स्थिति साहित्य की होती हैं। विष्व की जिन भाषाओं ने उन्नति की उनका साहित्य विश्व स्तर का साहित्य बन गया उदाहरण के तौर पर आज जिस तरह से अंग्रेजी भाषा ने उन्नति की है उसी तरह से उसके साहित्य ने भी उन्नति की है।

प्रवासी कथा साहित्य में अपने अपनाएं हुए देष के परिवेष, संघर्ष, रिश्तों और उपलब्धियों पर जाने माने प्रवासी कथाकारों ने अपने लेखन द्वारा एक भिन्न समाज से परिचित करवाया है। भारतीय प्रवासी कथाकार के लिए यह आसान नही होता कि वह अपनाए हुए देश की संस्कृति, सभ्यता और रीति–रिवाजों से पूरी तरह जुड़ पाएं। उनकी जड़े अपनी मातृभूमि, संस्कारों एवं भाशा से जुड़ी होती हैं। प्रवासी भारतीय साहित्यकारों की इस प्रवृत्ति पर प्रकाश डालते हुए अनीता कपूर अपने लेख में कहती हैं कि– ''प्रवासी कथा साहित्यकारों में ऐसे बहुत से नाम हैं, जिनकी रचनाओं को पढ़कर आप बखूबी अनुमान लगा लेंगे कि आज भी विदेशों में रहते हुए भी वे दुनिया को भारतीय चष्मे से देखते हैं इसीलिए उनका लेखन नयेपन के बावजूद भी पाठक के दिल के करीब होता है और मन को दू जाता है।''[1]

उषा प्रियंवदा प्रवासी साहित्य की सर्वश्रेश्ठ कथाकार हैं इन्होने भारतीय और प्रवासी जीवन की सूक्ष्म परतों को अपनी कहानियों में खोला है प्रवासी कहानियों में भारतीय और विदेशी संस्कारों का टकराव तथा परिवेश व संस्कृति के द्वंद्व पर इनका एक कोई दूसरा कहानी संग्रह महत्वपूर्ण है। इसमें संकलित 'सागर पार का संगीत' कहानी स्त्री की अकेलेपन से मुक्ति पाने की चेष्टा है। 'चांदनी में बर्फ पर' कहानी में दो संस्कारों को दिखाया है जिनमें विदेशी स्त्री अपने प्रेमी के साथ निस्संकोच कहीं भी जाती है परन्तु भारतीय स्त्री अपने प्रेमी का निमंत्रण अस्वीकार कर देती है। 'पिघलती हुई बर्फ' में लेखिका ने यह दिखाया है कि जब दो प्रेमी युगल के बीच कोई तीसरा आता है तो ईर्श्या भयानक रूप धारण कर लेती है जो उस आने वाले की हत्या करके ही समाप्त होती है। इस प्रकार यह संग्रह नारी के टूटने और बिखरने की प्रस्तुति है जो बदलते हुए परिवेश में नए बन रहे संबंधों का परिणाम है। उषा जी ने विविध भावों को मार्मिकता और सहजता के साथ अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है और कहीं भी कृत्रिमता नहीं आने दी है। ये कहानियाँ भारतीय और विदेषी परिवेश में टकराहट उत्पन्न करती हुई लिखी गई हैं। उन्होने स्वीकार किया हैकृकृकृ ''इस संग्रह में प्रायः वे सभी कहानियाँ हैं जो भारतीय मन और विदेशी परिवेश का द्वन्द सामने रखती हैं। नए परिवेश और संस्कारों के बनने बिगड़ने को कथा रूप देती है, प्रामाणिक और निर्भीक अनुभूतियों को पहली बार साहस और तटस्थता से स्वीकृति देती हैं।''[2]

अमेरिका में रह रही सुशम बेदी आज भी भारतीय संस्कृति और उन रीति रिवाजों को भुला नहीं पायी है, जिनमें आज भी स्त्री हर रस्मों रिवाज को निभाने में पूरा सहयोग करती है। इनकी कहानी 'अवसान' में नायक शंकर अपने दोस्त का अंतिम संस्कार हिन्दु रीति से करना चाहता है, परन्तु उसकी अमेरिकन पत्नी हेलन चर्च में ही सारी औपचारिकताएं पूरी करना चाहती हैं। इस कहानी में स्त्री विदेशी मूल की है, तो उसका एक अलग ही रूप दर्षाया गया है जो भारतीय स्त्री से कहीं भी मेल नही खाता,

और उसकी पीड़ा नायक सहता है। भारतीय अपनी मातृभूमि व रिश्तों से अलग होकर विदेशी परिवेश में खुद को एडजस्ट नहीं कर पाते। यह स्वाभाविक ही है क्योंकि भारतीय और विदेषी सभ्यता व संस्कृति तथा जीवन शैली में अत्यधिक अन्तर है। कहानीकार तेजेन्द्र शर्मा ने अपनी कहानी 'अभिप्त' में एक भारतीय के उपेक्षित जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत किया है। रजनीकांत भारत से लंदन जाकर भी स्वयं को वहां की संस्कृति व परिवेश में नहीं ढाल पाता तथा उसके अपनी पत्नी से सम्बन्ध भी कानूनी कटघरे में न जाकर खत्म हो जाते है। अनिल प्रभा कुमार जी द्वारा रचित कहानी 'घर' अस्तित्व बोध की कहानी है। कहानी में नायिका नादिरा द्वारा अपने पति के नीरस और उबाऊ रवैये के कारण होनहार पुत्र व पति को छोड़ देना पुत्र सलीम के डॉ0 बनने के सपने को भंग कर देता है। लेखिका ने प्रवासी मन के द्वंद्व को दिखाने के लिए लेखकीय तटस्थता का प्रयोग किया है। जहाँ सलीम मनोचिकित्सक की सलाह पर चिड़ियाघर में नौकरी करके उसे ही अपना आशियाना बना लेता है। कहानी की अन्तिम पक्तिया उसकी मार्मिक स्थिति को उजागर करती है– ''सलिल वहीं कार में बैठा देखता रहा। सलीम धीरे–धीरे पैर घसीटता हुआ उस राख के आशियाने के नीचे जा रहा था– अपना घर''[3] लेखिका ने कहानी में सलीम की दर्दनाक संवेदना को प्रस्तुत करने के लिए बाल–मनोविज्ञान की सूक्ष्म परतों को विश्लेषित किया है।

उषा देवी विजय कोल्हटर ने अपनी कहानियों में अमेरिकी जीवन–शैली और संस्कारों के समानान्तर भारतीय जीवन पद्धति और जिन मूल्यों को रखा है, वह सराहनीय है। 'सरोगेट मदर' कहानी में अमेरिकी समाज की नई पीढ़ी जिन विकारों में जी रही है उस पर इन्होने प्रकाश डाला है। अध्ययन काल में हॉस्टल रहने आई ऊशा से उसकी अमेरिकी मित्र पूछती हैं कि क्या तुम डाँस करती हो, क्या सिगरेट, शराब तथा ड्रग्स का सेवन करती हो? तो उषा इन सबके नकारानात्मक जवाब देती है जिस पर वे सहानुभूति व्यक्त करती है हुई कहती है कि तब तो तुम्हें बहुत सी समस्याओं से जूझना पड़ेगा। इस कहानी का केन्द्र सिंडी नामक वैश्या है जो पहले विज्ञापन का व्यवसाय करती थी अधिक धन के स्वार्थ में वह वैश्यावृत्ति पर उतर आई पर जब इससे भी उसे अधिक धन नममाज के इन विकारों की कटु आलोचना करते हुए वीरेन्द्र मोहन कहते हैं–''अमेरिकी समाज में मातृत्व की भावना और वात्सल्य का तथा माता–पिता के प्रति सन्तान का दृष्टिकोण बेमतलब है। यहां मातृत्व को बाजार बना दिया गया है। यहाँ अमेरिकी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के नरक के द्वारा को स्पश्ट रूप से देखा जा सकता है।''[4] प्रवासी हिन्दी कहानी पर विष्लेशण करते हुए यह बात सामने आती है कि जितनी भी प्रवासी साहित्य में कहानियां लिखी गई उनके केन्द्र में अधिकतर स्त्री जीवन है। स्त्री जीवन को केन्द्र में रखकर इन्होने स्त्री–विमर्श पर बात तो की परन्तु इनका विमर्श भारतीय–स्त्री विमर्ष से भिन्न है। डॉ0 प्रीत अरोड़ा भारतीय और प्रवासी कहानियों में चित्रित स्त्री विमर्श में अन्तर स्पश्ट करती हुई कहती है, ''आज भारत में लिखी जा रही अधिकांश कहानी स्त्री–विमर्ष के नाम पर दैहिक विमर्श भी करती नजर आती हैं। स्त्री–पुरूष संबंधो की कहानियाँ वहाँ भी हैं मगर उनमें उतना खुलापन नहीं है, जितना भारतीय हिन्दी कहानियों में नजर आजा है।''[5] उषा वर्मा की कहानी 'सलमा' भारतीय नारी सलमा के मानसिक द्वंद्व और निर्णय लेने की क्षमता पर आधारित स्त्री अस्मिता की कहानी है। द्वंद्व के चलते आत्महत्या करने का प्रयास करती है, परन्तु जल्दी ही वह आत्मबल से शसक्त होकर अपने पति को छोड़ देती है और पुनर्विवाह के लिए तैयार हो जाती है लक्ष्मीधर मालवीय की कहानी 'सुबह की सीढियाँ' में द्वितीय विष्वयुद्ध से उत्पनन मानवीय त्रासदी

की अंतर्कथा है। सबसे अधिक त्रासदी झेलने के बाद भी जापान को द्वितीय विश्वयुद्ध का खलनायक माना गया है। विश्वयुद्ध के बाद जापान में पुनर्निर्माण की प्रक्रिया शुरू होती है, जिसके फलस्वरूप तीव्र षहरीकरण के कारण विषाल अट्टालिकाओं का निर्माण होता है। अत्यधिक औद्योगिकीकरण एवं शहरीकरण के फलस्वरूप मानवीय मूल्यों में गिरावट आई है। कहानी में 'युरिचान' नामक नायिका प्रेम न पाने के कारण नशे का सहारा लेती है। वस्तुतः ऐसे समय में प्रेम के लिए किसी के पास वक्त नहीं है, मनुष्य मशीन मात्र बनकर रह गया है। आजकल विदेशों में सम्बन्ध–विच्छेद का जो चलन चला हुआ है।

उसका बच्चों का क्या प्रभाव पड़ता है उषा राजे सक्सेना ने इसको अपनी कहानी 'डैडी' में चित्रित किया है। माता–पिता का अलगाव उनकी बेटी में अविष्वास पैदा कर दता है। यद्यपि बेटी को उसके सौतेले पिता से बहुत प्यार मिलता है फिर भी उसके मन में एक ही सवाल कचोटता है कि आखिर उसके पिता ने उससे नाता क्यों तोड़ा था। प्रवासी हिन्दी कहानियों का विष्लेशण करने से यह निष्कर्श निकलता है कि विदेशी संस्कृति के टकराव से भारतीय संस्कृति में भी विकार उत्पन्न हुआ है। आज के व्यक्ति के लिए प्रचीन मान्यताएं बदल चुकी हैं वह अपने जीवन में किसी का हस्तक्षेप स्वीकार नहीं करता। बहुत से व्यक्ति ऐसे भी हैं जिनके लिए विवाह संस्था से जुड़ी भारतीय कल्पना का कोई मूल्य नहीं रह जाता। भारतीय समाज की अपेक्षा विदेशी समाज में लिव–इन–रिलेशनिप, प्रेम–प्रसंग, विवाह–विच्छेद व पुनर्विवाह आदि आसानी से स्वीकार किए जाते हैं। इन्हीं सब परिस्थितियों से प्रवासी भारतीय द्वंद्व की स्थिति में पहुंच जाते हैं। यही प्रवासी साहित्य की कहानियां की मूल संवेदना है।

सन्दर्भ सूची

1. अनीता कपूर : प्रवासी कथा साहित्य और स्त्री गद्यकोश
2. उशा प्रियंवदाः कोई एक दूसरा, कवर पेज
3. अनिल प्रभा कुमार – 'घर', पृ0–3
4. वर्तमान साहित्य : वीरेन्द्र मोहन – उशादेवी विजय कोल्हटकर की कहानियां, साहित्य सं0 कुंवरपाल सिंह व नमिता सिंह पृ0–195
5. डॉ0 प्रति अरोड़ा– प्रवासी साहित्य की कहानियों में यथार्थ और अलगाव के द्वंद्व, हिमालिनी, सं0 डॉ0 श्वेता दीप्ति, 19 अप्रैल 2013